हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

सोमवार, 04 नवंबर 2019, लखनऊ, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण

www.livehindustan.com

वर्ष 24, अंक 254, 16 पेज+4 पेज लाइव, मूल्य ₹ 4.00, कार्तिक शुक्ल पक्ष, अष्टमी विक्रम सम्वत् 2076

रोहित का रिकॉर्ड

टीम इंडिया के सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा सर्वाधिक टी-20 मैच खेलने वाले भारतीय बन गए हैं। उन्होंने महेंद्र सिंह धौनी का रिकॉर्ड तोड़ा।

पेज 14

प्रदूषण का प्रकोप

सलाह: आम-नीम-महुआ लगाएं, प्रदूषण रोकें

शहर के अनियोजित हो रहे विकास को समय रहते अगर नहीं रोका गया तो प्रदूषण की स्थिति और भयावह होगी। देशी मूल के वृक्ष तैयार करने होंगे। ये वृक्ष प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक होंगे। आम, महुआ, नीम, बरगद, के पेड़ प्रदूषण में लाभदायक साबित हो सकते हैं। प्रदूषण पर वैज्ञानिकों की राय...

वाहनों की संख्या और आबादी में इजाफा होने से सड़क पर आवागमन बहुत बढ़ गया है। इससे धूल के कणों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। कूड़ा व पराली जलने से स्थिति भयावह होती जा रही है। वृक्षों के माध्यम से ही इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है। मत्स्य पुराण में भी वृक्षों के संरक्षण पर विस्तृत वर्णन है। एक पौधे को वृक्ष के रूप में तैयार करना दस पुत्रों के पालन-पोषण के बराबर माना गया है। वृक्ष काटने वाले को संतान की हत्या के बराबर बताया गया है। इसलिए जितने अधिक वृक्ष लगाए जाएंगे प्रदूषण से उतनी ज्यादा राहत मिलेगी।

प्रो. भरतराज सिंह, पर्यावरण वैज्ञानिक व प्रभारी वैदिक विज्ञान केन्द्र

सड़क के किनारे बड़ी पत्तियों वाले पेड़ लगाने की जरूरत है। जिससे हवा में उड़ने वाली धूल के कण पत्तियों पर चिपक जाएं। पहले सड़क के दोनों ओर पेड़ लगाने के पीछे यह प्रमुख कारण था। लोगों को छाया भी मिलती थी और धूल के करण वही पेड़ों पर चिपक जाते थे। लेकिन अब किसी हाइवे पर पेड़ नजर नहीं आ रहे हैं। साथ ही हवा बंद है। तापमान में गिरावट आ रही है। ऐसे में धूल के कणों का भ्रमण रूक गया है। वह एक स्थान पर टिक गए हैं। ऐसे में लोगों को सचेत रहने की जरूरत है। पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ज्यादा इस्तेमाल करें। जरूरत हो तभी अपने वाहन निकालें वरना सार्वजनिक परिवहन के साधनों का प्रयोग करें।

प्रो. आलोक धवन, निदेशक, आईआईटीआर

वायु प्रदूषण के कारण समझने होंगे। तापमान का कम होना, ट्रैफिक, निर्माण कार्य और कूड़ा जलाने के कारण यह बढ़ा है। दीपावली में जलाए गए पटाखों के बाद से प्रदूषण बढ़ा है। पानी का छिड़काव और प्रदूषण पैदा करने वाले कारकों पर लगाम लगाई जा सकती है। प्रदूषण के लिए मौसम भी काफी हद तक जिम्मेदार है। बारिश होने से धुंध छट सकती है और प्रदूषण से राहत मिल सकती है।

प्रो. ध्रुव सेन सिंह, भूगर्भ विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

सड़क के दोनों किनारों को कच्चा छोड़ दिया जा रहा है। इससे वाहनों के चलने पर धूल उड़ाना तय है। यदि कच्चा छोड़ा जा रहा है तो वहां पर घास लगाई जाए। सड़कों में बड़े-बड़े गड्ढे धूल उड़ने का बड़ा कारक बने हुए हैं। पहले सड़क के किनारे देशी मूल के पौधे लगाए गए थे। अब विदेशी मूल का सप्तपर्णी पेड़ लगा दिया गया है। इसपर न तो धूल चिपकती है और हमारी प्रकृति के अनूकूल है। दीपावली बाद अक्सर बारिश हो जाया करती थी। इससे पटाखों के प्रदूषित कण नीचे आ जाते थे।

डा. पीके श्रीवास्तव, पूर्व वैज्ञानिक, सीडीआरआई

वन विभाग ने चौक में हरे पेड़ों को काटा

हरे पेड़ों को बचाकर जहां पर्यावरण को स्वच्छ बनाने का संदेश दिया जा रहा है। वहीं वन विभाग चौक क्षेत्र में हरे पेड़ों पर आरा चलवा रहा है। ऐसा ही एक मामला रविवार को चौक में सामने आया। स्थानीय लोगों का कहना है कि पेड़ वर्षों पुराना है। पेड़ काटने के लिए वन विभाग से मंजूरी लेने का कोई प्रमाण नहीं दिखाया गया।